

विडा घ्यावो नरहरिराया धरूनी मानवाची काया ॥
यतिवेषा घेउनिया वससी दिसी ताराया ॥ विडा ॥ धृ ।

ज्ञान हे पूगीफळ भक्तिनागवल्लीदळ ॥
वैराग्य चूर्ण विमल सत्किया सकळ ॥ विडा ॥ १ ॥

प्रेमरंगी जैसा कात एळा अष्टभावसहित ॥
जायफळ क्रोधरहित पत्री सर्व भूतहित ॥ विडा ॥ २ ॥

खोबरें हेचि क्षमा फोडुनि द्वैताच्या बदामा ॥
मनोजाचा वर्ख हेमा कर्पूरहित शांतिनामा ॥ विडा ॥ ३ ॥

कस्तुरी निहंकार कोटे न मिळे उपचार ॥
भीमपुत्र यास्तव फार स्वाद्य देऊन वांरवांर ॥ विडा ॥ ४ ॥